राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, ढ़िगारिया, थानागाजी, अलवर (राज.)

रामपाल सोनवाल, टीआर

कक्षा अनुसार बच्चों का नामांकन

कक्षा	बालक	बालिका	योग
1	7	8	**15**
2	0	9	**9**
3	3	7	**10**
4	3	11	**14**
5	5	11	**16**
6	13	17	**30**
7	9	11	**20**
8	8	13	**21**
योग	**48**	**87**	**135**

कुल शिक्षक – 8

सीसीई स्कीम पायलट परियोजना के अन्तर्गत मैं इस वर्ष राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ढ़िगारिया में सीसीई स्कीम को लेकर शाला स्तर पर शिक्षकों एवं बच्चों के साथ कार्य करके सीसीई स्कीम की आवश्यकता एवं उपयोगिता को समझाने का प्रयास किया तथा बच्चों के शिक्षण में प्रक्रिया को किस प्रकार समाहित करके देखा जाता है। इसको प्रयोग के तौर कार्य करके समझने एवं समझाने काप्रयास किया। कार्य की शुरूआत में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन एक–एक समस्या पर शाला स्तर पर शिक्षकों की टीम के साथ सतत कार्य करके समाधान का प्रयास किया। शाला स्तर पर वर्ष 2013–14 में सीसीई स्कीम को लेकर जो कार्य किया गया, उसकी समीक्षात्मक रिपोर्ट इस प्रकार है –

1. बच्चों के स्तर का पता लगाना एवं स्तरानुसार शिक्षण कार्य करना

पहले शिक्षक साथी बच्चों के साथ कक्षा के अनुसार सभी बच्चों के साथ एक प्रकार का कार्य करते थे। उनको इस बात की समझ स्पष्ट नहीं थी कि सभी बच्चों का स्तर बराबर न होने की स्थिति में शिक्षण कार्य किस प्रकार किया जाये। इसके लिए पहले बच्चों का स्तर किया गया तथा स्तर अनुसार मॉड्यूल तय करके स्तर अनुसार बच्चों के साथ किये जाने वाले कार्यों की योजना बनाकर स्तर अनुसार शिक्षण कार्य करने की समझ पर कार्य किया।

2. योजना बनाकर शिक्षण कार्य करना

शिक्षक साथी तय मॉड्यूल में योजना बनाकर शिक्षण कार्य तो करने का प्रयास तो करते थे, लेकिन उनकी योजनाएँ अनियमित थी योजना का सम्बन्ध बच्चों के स्तर अनुसार नहीं था। सभी बच्चों के लिए एक ही योजना बनाते थे। इस पर शिक्षक साथियों के साथ बातचीत किया गया कि हमें तय मॉड्यूल के अनुसार नियमित योजना बनाकर स्तर अनुसार शिक्षण कार्य करना

चाहिए ताकि सभी बच्चे अपने स्तर व गति के अनुसार कार्य कर सके और अच्छा सीख सके। उदाहरण तौर पर शिक्षकों के साथ स्तर अनुसार शिक्षण कार्य करके भी दिखाया गया। शिक्षकों की अब समझ बनी हैं और वे बच्चों के साथ नियमित योजना बनाकर शिक्षण कार्य करने का प्रयास करने लगे।

3. पाक्षिक योजना की समीक्षा

योजनाएँ अनियमित होने के साथ–साथ समीक्षा भी अनियमित थी। योजना का समीक्षा से स्पष्ट जुड़ाव नहीं था। इसको लेकर शिक्षक साथियों के समूह के साथ बातचीत की गई कि समीक्षा का जुड़ाव योजना से होना चाहिए क्योंकि समीक्षा हम उसी कार्य की करते हैं जो कार्य हम बच्चों के साथ करते हैं। अतः समीक्षा योजना अनुसार किये गये कार्य की एक रिपोर्ट है, जिसके माध्यम से यह तय किया जा सकता है कि तय योजना अनुसार बच्चों के साथ कितना काम हो पया हैं और बच्चों के सीखने की क्या स्थिति हैं। समीक्षा आगामी कार्य योजना तय करती हैं। बातचीत एवं कार्य का असर शिक्षकों पर पड़ा है। योजना अनुसार समीक्षा में नियमितता तो आई है। लेकिन गुणवत्ता पर अभी पर्याप्त कार्य की आवश्यकता है।

4. चैकलिस्ट संधारण एवं पोर्टफोलियो संधारण

शिक्षकों के साथ चैकलिस्ट, योजना व समीक्षा और पोर्टफोलियो के अुड़ाव को लेकर बातचीत किया गया और समझाया गया कि इस सभी का आपसी सम्बन्ध होता है, जो बच्चों की शैक्षिक स्थिति को एक दर्पण की तरह स्पष्ट दिखाते हैं अतः इनका नियमित संधारण करना अति आवश्यक है। ये बालक के सतत आकलन के मुख्य दस्तावेज़ है। शाला में सभी बच्चों का पोर्टफोलियो बनाकर उसको नियमित संधारित किया जाने लगा है। सप्ताह में कम से कम एक कार्यपत्रक बच्चों की फाईल में लगाये जाने लगा है। लगाये गये कार्यपत्रक पर टिप्पणी दर्ज़ किये ही कार्यपत्रक लगा देते थे। इसमे सुधार आया है। साप्ताहिक कार्यपत्रकों की नियमितता पर अभी और ध्यान देने की आवश्यकता लगती है। चैकलिस्ट को कुछ साथी 15 दिन में ट्रेक करते थे और कुछ साथी 2 माह में ट्रेक करते थे। अतः इस पर शिक्षकों के साथ विचार–विमर्श किया गया कि चैकलिस्ट कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के सतत आकलन का एक मुख्य हिस्सा है अतः इसे नियमित शिक्षण प्रक्रिया के दौरान ही दर्ज़ किया जाना चाहिए। शिक्षकों को कक्षा में शिक्षण के दौरान चैकलिस्ट पर कार्य करके भी दिखाया गया। शिक्षक साथी इस बात को मानने भी लगे हैं, लेकिन अभी यह कार्य नियमित नहीं हो पाया है।

5. कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाएँ

बच्चों की बैठक व्यवस्था पुराने तरीके से ही थी इस पर बातचीत करके आवश्यकता अनुसार बदलने के लिए कहा गया। शिक्षक को बच्चों की समस्याओं को समझते हुए आवश्यकता अनुसार उपसमूह शिक्षण करके बताया गया एवं शिक्षकों से भी ऐसा करने के लिए कहा गया। बच्चों को स्वयं के स्तर पर करके सीखने से सम्बन्धित गतिविधियाँ कराने एवं सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग करने से सम्बन्धित कार्य करके बताया गया। शिक्षक साथी उपरोक्त कार्य करने का प्रयास तो करते हैं लेकिन उनका यह कार्य कुछ दिन तक ही चलता है, फिर वे अपने पुराने तरीके पर आ जाते हैं। अतः कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में सुधार पर नियमित एंव पर्याप्त कार्य की आवश्यकता लगती है।

6. पुस्तकालय

शाला में पुस्तके उपलब्ध थी। रजिस्टर बना हुआ था। लेकिन उनका उपयोग सुनियोजित तरीके से नहीं हो पा रहा था। इसके लिए पुस्तकालय प्रभारी से बातचीत करके पुस्तकालय को व्यवस्थित किया गया और प्रत्येक सप्ताह में एक कक्षा का एक पुस्तकालय कालांश तय किया गया।

7. शाला व्यवस्था

विद्यालय की सफाई व्यवस्था एवं प्रार्थना सभा में शिक्षकों की भागीदारी कम थी। अतः इसको लेकर प्रधानाध्यापक एवं शिक्षक साथियों से बातचीत किया गया कि सफाई व्यवस्था एवं प्रार्थना सभा में हमें भी बच्चों का सहयोग करना चाहिए। बात का असर पड़ा लेकिन वह निर्देश देने तक ही सीमित है। सभा में जरूर कुछ भागीदारी निभाने लगे हैं। प्रार्थना सभा में प्रार्थना, गीत, बालगीत, अभियान गीत एवं प्रश्नोत्तरी से सम्बन्धित गतिविधियाँ कराई जाती है।

8. खेलों का समय सारणी में स्थान

विद्यालय में खेलों पर कम ही ध्यान दिया जाता था। लंच में बच्चे अपनी इच्छा से ही खेल खेलते थे। कोई कालांश व्यवस्था भी नहीं थी। इसके सम्बन्ध में प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के साथ बातचीत की गई तो एक कक्षा का एक साप्ताहिक कालांश तय किया गया। जिसमे शिक्षक बच्चों के साथ जुड़कर खेल खिलाना तय हुआ। अब बच्चे आनन्द के साथ खेल खेलते हैं, लेकिन शिखकों की भागीदारी जैसी होनी चाहिए उस रूप में नहीं हो पायी है।

9. कक्षा–कक्षों की स्थिति

विद्यालय के कक्षा–कक्षों की स्थिति का अवलोकन किया गया तो देखा गया कि उनमे टीएलएम की मात्रा बहुत कम थी और जो टीएलएम लगा हुआ था वह भी ठीक स्थिति में नहीं था। अतः कक्षा–कक्षों को सीखने–सिखाने एवं शिक्षण उपयोगी बनाने के लिए बच्चों की आवश्यकता एवं स्तर अनुसार टीएलएम बनाकर लगाया गया और कक्षा–कक्षों को व्यवस्थित किया गया।

10. शिक्षकों की सोच में बदलाव

सीसीई को लेकर शुरूआत में शिक्षकों की सोच सकारात्मक नहीं थी। वे इसे अनावश्यक भार के रूप में देखते थे। उनका कहना था कि इसमे समय का दुरूपयोग होता है, जिसके कारण बच्चों का शिक्षण कार्य प्रभावित होता है। शिक्षकों की सोच में बदलाव लाने एवं सीसीई की उपयोगिता पर आवश्यकता को समझाने के लिए शाला स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया को शिक्षकों के साथ जुड़कर करके दिखाया और शिक्षकों की यह समझ बनाने का प्रयास किया कि सीसीई एक अनावश्यक भार नहीं है, बल्कि बालक की शैक्षिक स्थिति का नियमित आकलन करते रहने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। जिसके द्वारा बालक का सीखना निश्चित किया जा सकता है। सीसीई के समस्त दस्तावेज़ों की उपयोगिता एवं उन पर किये जाने वाले कार्यों की समझ से शिक्षकों की सोच में बदलाव आया है और अब वे इसे भार न मानकर शिक्षण में उपयोगी मानने लगे हैं।